ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 80-81

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-03, No.-II, Issues-15YEAR-2014 Extra

बिहार के नोनिया जाति में सामाजिक असमानता और शिक्षा : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

रणधीर नारायण
शोध अध्येता– समाजशास्त्र विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया (बिहार), भारत

सारांश : ***नोनिया जाति का उल्लेख ऋग्वेद की ऋचाओं में तथा रामायण और महाभारत के वर्णनों में उपलब्ध होता है । मुगलकालीन भारत के इतिहास में सैन्य–सामग्री के निर्माण में इस जाति के लोगों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण थी । इसी तरह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में नोनिया जाति के लोगों ने महात्मा गाँधी के नेतृत्व में अविराम संघर्ष किया । परन्तु मशीनीकरण तथा नगरीकरण के विस्तार के बाद इस जाति की जीविका संकटग्रस्त हो गयी । इनमें शिक्षा से लेकर सफाई कार्य अथवा निम्नतम कार्य सम्मिलित है ।***

कुंजीभूत शब्द– रामायण, महाभारत, मुगलकालीन, इतिहास,जाति, भूमिका, स्वतंत्रता, आंदोलन, जाति ।

नोनिया जाति को बिन्द, बेलदार, खरिया, चौहान आदि नामें से पुकारा जाता है। यह जाति मूलतः नमक निर्माण व्यवसाय से संबंधित था। नमक के साथ शोरा का निर्माण भी ये लोग करते थे। साथ ही बारूद के निर्माण में भी वे अत्यन्त दक्ष होते थे। शिक्षा अज्ञानता रूपी अन्धेरे को समाप्त करने वाली प्रकाश की किरण है जो हमें हर विषय को तर्क के धरातल पर माप कर प्रयोग करने को प्रेरित करती है, अर्थात, हमारे समक्ष सही–गलत, उचित–अनुचित, नैतिक–अनैतिक, वैधानिक–अवैधानिक के बीच अन्तर स्पष्ट करती है।[1] अब प्रश्न उठता है कि शिक्षा है क्या? क्या वे प्रमाण–पत्र जो हमें मैट्रिक, इण्टर, स्नातक, स्नातकोतर या अन्य तकनीकी प्रमाण–पत्र धारी बनाते हैं या वह शक्ति जो हमारे तर्क तथा विवेक का मार्ग प्रशस्त कर हमें आगे बढ़ने के लिए तैयार करती है, हमें सही गलत का दिशा–निर्देश देती है। पेस्टालाँजी (1981)[2] का कहना है कि "शिक्षा व्यक्ति की लयात्मक, गयात्मक और रागात्मक प्रगति है।" गाँधी जी मानते थे कि शिक्षा जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है। उनके अनुसार, "शिक्षा बालक का सर्वांगीण विकास है।"[3] कहने का अभिप्राय यह है कि शिक्षा व्यक्ति, परिवार, समाज तथा देश के विकास का प्रमुख सहायक तत्व है। शिक्षा वह धन है, जो कभी समाप्त नहीं होता, जिसे न तो चोरी का भय होता है और न ही नष्ट होने का, बल्कि वह एक सम्पति होता है, जो व्यय करने पर और अधिक बढ़ती है। शिक्षा ज्ञान का ऐसा माध्यम है जो व्यक्ति की आत्मा को उज्जवलित करती है।

इस शोध लेख के माध्यम से शिक्षा तथा नोनिया जाति के बीच में मौजूद संबंधों का विश्लेषण किया गया है।[4] यहाँ पर यह संकेत कर देना आवश्यक है कि वर्तमान समय में संकलित तथ्यों के आधार पर स्पश्ट होता है कि नोनिया जाति से संबंधित व्यापक पैमाने पर आधुनिक शिक्षा का विकास संभव नहीं हो पाया है । अभी भी अंधिकश नोनिया जाति के लोग अशिक्षा के आलम में जीवन गुजारते हैं । यह स्पश्ट है कि नोनिया जाति में उच्च शिक्षित लोगों की संख्या अधिक नहीं है । साथ ही यह भी स्पश्ट होता है कि इस जाति में अभी भी शिक्षा का व्यापक तौर पर प्रचार संभव नहीं हो पाया है ।

शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य यह होता है कि वह राष्ट्र निर्माण में विशेष योगदान देती है। शिक्षक के बारे में दुर्खीम[5] ने अपने विचार कुछ इस तरह व्यक्त किये हैं, "जिस प्रकार से पुजारी अपने देवता का दुभाषिया होता है उसी प्रकार से शिक्षक अपने समय व अपने देश के महान नैतिक विचारों का व्याख्याकार या दुभाषिया होता है।" उन्होंने आगे कहा कि "भूतकाल की ही भाँति वर्तमान में ही हमारा शैक्षिक आदर्श अपने प्रत्येक अर्थ में समाज का ही कार्य होता है। यह समाज ही है जो हमारे लिए इस प्रकार के व्यक्ति का चित्र चित्रित करता है जिसे हम चाहते हैं, उस चित्र में उस समाज की व्यवस्था की सभी विशेषताएँ प्रतिबिम्बित होती हैं।"[6] शिक्षा के कार्य की चर्चा करते हुए दुर्खीम ने कहा है, "सबसे महत्वपूर्ण कार्य तो यह है कि शिक्षा सामाजिक उद्देश्य की पूर्ति का एक सामाजिक साधन है– ऐसा साधन जिससे समाज अपने अस्तित्व को सुनिश्चित करता है। शिक्षक समाज का अभिकर्ता है, वह सांस्कृतिक सरंचना की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। वह एक सामाजिक और नैतिक व्यक्ति का निर्माणक है। शिक्षक ही समाज के अनुरूप व्यक्ति की रचना करता है। यही शिक्षा का कार्य व गौरव है। शिक्षा एक नया व्यक्ति बनाती है।"

अन्त में शिक्षा जीवन का ही अंग है, इसलिए शिक्षा को जीवन से अलग हटकर नहीं होना चाहिए। जो

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-03, No.-II, Issues-15YEAR-2014 Extra

शिक्षा जीवन की समस्याओं से मुकाबला करने के लिए तैयार नहीं करती, वह शिक्षा व्यर्थ है, लेकिन दुर्भाग्यवश हमलोग शिक्षा को जीवन से अलग कर दिये हैं, शिक्षा को एक खास उम्र से जोड़ दिये हैं, शिक्षा को एक खास स्थान और चारदीवारी से जोड़ दिये हैं, शिक्षा को एक खास शिक्षक के साथ जोड़ दिये हैं और शिक्षा को सरकारी तामझाम के साथ जोड़ दिये हैं जिसके कारण शिक्षा की खिड़कियाँ जीवन की ओर खुली ही नहीं है और न जीवन की खिड़कियाँ शिक्षा की ओर खुली हैं, जबकि वैदिक परम्परा में दिमाग की सभी खिड़कियों को खोलने और चारों तरफ से खुली हवा और रोशनी आने की बात कही गयी है। जो जीवन की परीक्षा में सफलता दिलाए वहीं शिक्षा सही है।' पर आज के मौजूदा समय में जो औपचारिक परीक्षा में सफलता दिलाती है और नौकरी दिलवाती है वही शिक्षा मानी जाती है। इसलिए परीक्षण का तंत्र काफी विशाल, जटिल, एकांगी और हिंसात्मक हो गया है।

तथ्य संकलन– बिहार में नोनिया जाति में शिक्षा के सम्बन्ध में तथ्य संकलन के दौरान अनुसंधानकर्ता को सूचना हासिल हुई कि नोनिया जाति की महिलाओं में घोर अशिक्षा है। जाहिर है कि गरीबी तथा लाचारी के कारण पुरूष सदस्यों की शिक्षा संभव नहीं हो पाती। ऐसी हालत में लोग बेटी की शिक्षा के बारे में नहीं, बल्कि बेटी के हाथ को पीला करने के सम्बन्ध में व्यग्र रहते हैं। सम्पूर्ण भारत में स्त्री–शिक्षा की हालत अत्यन्त दयनीय है। भारत के पुनर्जागरण आन्दोलन के समय स्त्री–शिक्षा एक प्रमुख मुद्दा था। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, स्वामी विवेकानन्द तथा रवीन्द्रनाथ टैगोर ने स्त्री–शिक्षा के पक्ष में अपना प्रबल विचार तथा समर्थन प्रस्तुत किया। किन्तु उच्च जाति की स्त्रियों में शिक्षा का प्रचार–प्रसार कुछ रूपों में संभव हुआ। मध्यम तथा निम्न जातियाँ अभी भी इससे लगभग वंचित हैं।

साहित्य की समीक्षा– नोनिया (लवणकर) जाति का उल्लेख ऋग्वेद की ऋचाओं में तथा रामायण और महाभारत के वर्णनों में उपलब्ध होता है । यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि अथर्ववेद तथा अन्य संस्कृत ग्रंथों में उद्धत लवण (जिससे नोनिया, लोनिया का निर्माण हुआ है), लवणाध्यक्ष आदि शब्दों का उल्लेख भी इस बात का यथेष्ट प्रमाण है कि हिन्दुओं के आदि ग्रंथों में भी इस जाति की चर्चा हुई है। प्रसिद्ध शिक्षाविद जे. एन. भट्टाचार्य ने नोनिया समुदाय की उत्पति, विकास खान–पान और पूजा–पाठ के संबंध में विशद विश्लेशण प्रस्तुत किया है । श्री भट्टचार्य ने नोनिया समुदाय को अनार्थ अर्थात् इस देश का मूल निवासी स्वीकार किया है तथा उनके खान–पान और पूजा–पाठ के संबंध में विशद विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

शोध प्रविधि– प्रस्तुत शोध–लेख में द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से समाजिक, सैद्धांतिक विश्लेषणात्मक, तुलनातम्क एंव नवीन व्यवहारिक पद्धतियों को अपनाते हुए शोध–लेख को मौलिकता प्रदान करने का प्रयास किया गया है । इस शोध लेख हेतु बिहार के नोनिया जाति में सामाजिक असमानता और शिक्षा से संबंधित पुस्तकालयों इंटरनेट एंव शोध संस्थानों आदि में उपलब्ध साधनों के अलावा मध्यकालिन तथा आधुनिक संदर्भ–ग्रंथों से एकत्र किया गया है। इन संदर्भ पर आधारित पुस्तकों के अलावा विभिन्न आयोगों के प्रकाशनों आत्मलेखो, समाचार पत्र–पत्रिकाओं, राजनीतिक दलों के घोषणापत्रों एवं राजनेताओं के भाषण इत्यादि के लेखन सामाग्री संग्रहित कर विष्लेशणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है ।

निष्कर्ष– निष्कर्ष के रूप यह कहा जा सकता है कि उपर्युक्त तथ्यों के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि नोनिया जाति के लोग शिक्षा के क्षेत्र में संक्रमण और परिवर्तन के दौर से गुजर रहे हैं। अधुनिक शिक्षा का प्रचलन नोनिया जाति में नहीं हुआ है । इस कारण इस जाति के लोगों को अच्छी नौकरी भी नहीं मिल पायी है । फलतः घोर गरीबी और लाचारी की स्थिति में इस जाति के लोग संघर्षरत हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. पेस्टालॉजी, हाऊ गार्टिड्यूट टीचेज हर चिल्ड्रन, 1981, पृ. 301.
2. M.K. Gandhi, Satya Ka Prayoge, Navjivan Prakashan, Ahmedabad, 1957.P.172.
3. इमाइल दुर्खीम, यॉरेल एजुकेशन, न्यूयार्क, फ्री प्रेस, 1961, पृ.79.
4. Ibid, P. 113.
5. Ibid, P. 113.
6. M.N. Srinivas, Social changes in Modern In dia, Allied Publishers, Bombay, 1966.
7. B.M. Jha, Adhunid Bharat men Jati Abam Siksha, Janki Prakashan, Patna,1985.

*****